Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

आँगनवाड़ी केन्द्र में आने वाले बच्चों को शाला पूर्व शिक्षा तथा अनुरूप शैक्षिक क्रियाएँ

कमल कृष्णानी
शोधार्थी–समाजशास्त्र
अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा म.प्र.

प्रस्तावना

आँगनवाड़ी केन्द्र में आने वाले बच्चों को शाला पूर्व शिक्षा दी जायेगी। इसके लिये विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, इससे बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जागृत होगी। इसके बेहतर परिणाम मिलने पर इसे प्रदेश के 92 हजार आँगनवाड़ी केन्द्र में विस्तारित किया जायेगा।

राज्य सरकार आँगनवाड़ी केन्द्रों में बच्चों को शिक्षित और संस्कारित बनाने के लिये व्यवस्था कर रही है। इसी कड़ी में बच्चों को शाला जाने के पहले शिक्षा देने का निर्णय लिया है। इनके अधीन आने वाले आँगनवाड़ी केन्द्र में प्रतिदिन 3 से 4 घंटे तक शाला पूर्व शिक्षा दी जायेगी। इसके लिये स्टॉफ को प्रशिक्षित किया गया है। राष्ट्रीय ई.सी.सी.ई. (अर्ली चाइल्ड केयर एण्ड एजुकेशन) नीति के अनुसार केन्द्र में बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम खेल तथा शिक्षण सामग्री स्थानीय, देशी एवं मातृभाषा में उपलब्ध करवायी जायेगी। बच्चों को बोल–चाल के जरिये अंग्रेजी भाषा के अक्षरों का भी सामान्य ज्ञान दिया जायेगा।

शाला पूर्व शिक्षा देने के लिये विशेष पाठ्यक्रम की 3 पुस्तकें तैयार की गयी हैं। पुस्तकें 3 से 4, 4 से 5 और 5 से 6 वर्ष आयु के बच्चों के मुताबिक बनायी गयी हैं। विशेष पाठ्यक्रम के अनुसार 12 माह की 19 गतिविधि तैयार की गयी हैं। इनमें बच्चों से की जाने वाली बातचीत, कहानी, नाटक, ड्रामा, कविताएँ और खेल शामिल हैं।

जुलाई से जून तक का एक वर्षीय गतिविधियों का केलेण्डर बनाया गया है, जो पॉयलेट प्रोजेक्ट में चयनित आँगनवाड़ी केन्द्र में लागू हो गया है। जुलाई माह में बच्चों को स्वयं की पहचान मेरा घर, व्यक्तिगत साफ–सफाई के बारे में बताया गया है। अगस्त माह में रंगों की पहचान और आकृति की पहचान की जानकारी दी जायेगी। सितम्बर में समय, स्थान, दिशा, पानी और अक्टूबर में तापमान, हमारा पर्यावरण और पेड़–पौधों के बारे में बताया जायेगा। नवम्बर में पशु–पक्षी, जनवरी में

हमारे मददगार, फरवरी में संख्या पूर्व अवधारणा और उसकी समझ, मार्च में आहार, अच्छी आदतें, अप्रैल में मौसम, मई में वैज्ञानिक अवधारणा, हमारे त्यौहार और जून माह में बच्चों को आत्म–विश्वास के बारे में शिक्षित किया जायेगा।

बालकों की शाला पूर्व शिक्षाः–

सभी बच्चों का यह अधिकार है कि उन्हें सर्वांगीण विकास एवं बृद्धि के वे सभी अवसर मिले जिनसे उनमें निहित क्षमताओं का भरपूर विकास हो सके। जीवन के आरंभिक वर्ष बृद्धि, विकास और सीखने की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण होते हैं। यह बात उन बच्चों पर भी लागू होती है जिनकी शारीरिक अक्षमताओं के कारण उनकी कृछ विशिष्ट आवश्यकतायें होती है। तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में हुए शोध यह सिद्ध करते है कि उम्र के इस चरण में मस्तिक का विकास बहुत तेजी से होता है। बच्चों के जीवन के प्रारंभिक वर्षो में आसपास का परिवेश उनके तंत्रिका तंत्र के विकास पर महत्वपूर्ण होता है। तीन से छः (3 से 6) वर्ष की आयु के दौरान बच्चों की जिन सर्वांगीण क्षमताओं का विकास होता है वे विद्यालय में उनके समायोजन एवं उनके खुशहाल जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक होती हैं, रचनात्मक खेलों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए निर्मित खेलों में किये गये परिवर्तनों तथा विकास उपयुक्त गतिविधियों के द्वारा बच्चों की स्मरण शक्ति का विकास होता है। इन गतिविवधियों के द्वारा ध्यान केन्द्रित कर पाते है और अपने पर नियंत्रण रखना सीखते हैं। बच्चों में कार्य निष्पादन एवं आत्मनियमन की योग्यतायें एक ऐसी नींव का काम करती है जिससे उनमें भरपूर आत्मविश्वास पैदा होता है और आगे के वर्षो में उनका सीखना भी बहुत आसान व कुशलता के साथ होता है। वे बडी सहजता से अपने साथियों के बीच और विभिन्न अधिगम शैलियों के साथ अनुकूल करना सीख जाते है। यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि बच्चों को भावनात्क रूप से संबंल प्रदान करने वाला ऐसा वातावरण मिले जिससे वे शिक्षक के साथ स्वस्थ्य एवं सुरक्षित संबंध विकसित कर सके। बच्चों को इस प्रकार का उमुक्त परिवेश देना चाहिए कि वे खोजबीन कर सके, सीख सके, अभिव्यक्त कर सके ओर स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा बना सके। शाला पूर्व कार्यक्रमों में बच्चों की प्रतिभागिता लाभदायक है, क्योंकि इससे बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा

तीनों पर ही सकारात्मक प्रभाव पडता है। यह उनके वर्तमान और भविष्य दोनो के लिए बहुत मायने रखती है यदि हम आर्थिक दृष्टिकोण से भी देखें तो शाला पूर्व शिक्षा विद्यालयों कार्यक्रमों में निवेश एक प्रकार से उच्च स्तरीय मानवीय संपदा की तैयारी है, जिसके लिए सार्वजनिक सहभागिता की विशेष आवश्यकता है।

शाला पूर्व शिक्षा कार्यक्रम से न केवल बच्चों और परिवारों को लाभ होता है, इससे सामाजिक असमानता भी कम होती है, और इस प्रकार समुदाय और अंततः पूरे समाज को लाभ पहुँचता है। इसलिए प्रेरक अनुभव देने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करना बच्चों को सीखने की योग्यताओं पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शाला पूर्व शिक्षा पाठ्यक्रमों का लक्ष्य ऐसा दृष्टिकोण विकसित करना है जिससे विकास के सभी क्षेत्रों में प्रत्येक बच्चे की स्वाभाविक क्षमताओं का विकास सुगमता से हो सके। पाठ्यचर्चा विकास की इन अवस्थाओं पर ध्यान देने पर बल देती है। जब बच्चे पूछताछ करते है, खोजबीन करते है और अपने बारे में और अधिक जानने का प्रयास करते हैं, साथ ही सीखने से जुडी उन प्रवृत्तियों और दक्षताओं की भी पहचान कर लेते है जो आगे जाने वाले जीवन के लिए जरूरी हैं। इन्ही कारणों की वजह से आंगनबाडी कार्यक्रम में शाला पूर्व शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू किया गया है।

शाला पूर्व शिक्षा वह शिक्षा है जो 03 से 06 वर्ष आयु समूह को दी जाती है। यदि औपचारिक शिक्षा का प्रथम चरण है। इसे पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नाम से भी जाना जाता है। शाला पूर्व शिक्षा भिन्न–भिन्न स्वरूपों में दी जा रही है, जैसे ऑगनबाडी, नर्सरी स्कूल पूर्व प्राथमिक विद्यालय, प्री पेटरी स्कूल, डिर गार्डन, मान्टेसरी स्कूल और सरकार एवं निजी विद्यालयों के पूर्व प्रथमिक अनुभाग। भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा समाज के हर तबके के बच्चों को शाला पूर्व शिक्षा से जोडने के लिए विशेष अभियान के तहत प्रत्येक ऑगनबाडियों में 03 से 06 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के विकास हेतु शाला पूर्व शिक्षा कार्यक्रम को लागू किया गया है।

शाला पूर्व एवं शिक्षा की संकल्पना :–

शाला पूर्व शिक्षण कार्यक्रम बच्चों को विद्यालय शिक्षा के लिए तैयार करने का एक प्रयास है जिसमें बच्चों की बहु–आयामी क्षमता का विकास ऐसी गतिविधियों के माध्यम से हो जो कि आयु के

अनुरूप प्रासंगिक हो। उनकी ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण शारीरिक, जीवन कौशल संज्ञानात्मक, सृजनात्मक गतिविधियों के द्वारा किया जा सके।

शाला पूर्व शिक्षा की संकल्पना है कि 03 से 06 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए सार्वभौमिक, समतावादी, आनंदमयी, समावेशित और बच्चों के परिवेश में से मेल खाते सीखने के अवसरों को समुन्नत से किया जाये। यह तब सभी संभव हो पायेगा जब अभिभावक और शिक्षक भावनात्मक रूप से समर्थन दे। संस्कृति से जुडे, बाल केन्द्रित प्रोत्साहनवर्धक अधिगम परिवेश सृजित करने में सहयोगी बनें। इसका लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का उसके उच्च मानक स्तर तक विकास हो सके ताकि खेल और विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप अभ्यास द्वारा जीवन पर्यन्त रहने वाले अधिगम कर मजबूत नींव तैयार हो सके, यह पाठ चर्चा इस बात को भी महत्व देती है। सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छे मूल्य, समीक्षात्मक चिंतन के कौशलों सहयोग संप्रेषण रचनात्मक तकनीक साक्षरता और सामाजिक भावनात्मक विकास भी हो। इस पाठचर्चा की यह भी सोच है कि जब बच्चे शाला पूर्व शिक्षा के बाद आंगनबाडी से प्राथमिक विद्याालय की ओर कदम बढाये तो उन्हें किसी प्रकार परेशानी न हो और वे भविष्य में रचनात्मक और संतोषप्रद जीवन का आनंद ले सके।

शाला पूर्व शिक्षा के उद्देश्यः–

शाला पूर्व शिक्षा अर्थात ऑगनबाडी केन्द्र के बच्चे अपने परिवेश में रंगों आकृतियों, ध्वनियों, आकारों और नमूनों के प्रति अत्यन्त जिज्ञासु और उत्साही होते हैं। उनकी अपने आस–पास के परिवेश को जानने समझने की और विभेदीकरण की क्षमता दिन प्रतिदिन बढती जाती है, यह आरंभिक अधिगमन बडों और साथियों दोनो ही के साथ संप्रेषण से होती है। बच्चों को इस प्रकार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध करवाने के लिए ऑगनबाडी केन्द्रों में शाला पूर्व शिक्षा की व्यवस्था की गई है, जिससे बच्चे अपने आस–पास के परिवेश को समझ सकें और सोचने समझने की क्षमता का विकास कर सकें।

अपने परिवेश को समझते समय बच्चे देखने, प्रश्न करने, चर्चा करने, अनुमान लगाने, विश्लेषण करने, खोजबीन करने और तरह–तरह की अवधारणाओं एवं विचारों की रचना करते है, और सुधार करते हैं। बच्चों को ऑगनबाडी केन्द्रों में शाला पूर्व शिक्षा को क्रियान्वित करने के लिए भारत सरकार

एवं प्रदेश की सरकार द्वारा निम्नाकित उद्देश्यों के लिए इस योजना को लागू किया गया है। अतः शाला पूर्व शिक्षा के उद्देश्य निम्नानुसार है–

1. एक ऐसे बाल अनुरूप वातावरण का निर्माण करना जहाँ सभी बच्चे अपना महत्व समझें, अपने आप में सम्मानित व सुरक्षित महसूस करें और स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव रखें।
2. बच्चों में बेहतर स्वास्थ्य, खुशहाली, पोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों के लिए मजबूत नींव डालना।
3. बच्चों को ऐसा परिवेश देना जो उन्हें प्रभावशाली संप्रेषण बनाने में मद्दगार हो और प्रभावशाली तरीके से सुनना बोलना सीख सके।
4. बच्चों को लगन से सीखने वाला बनने, समीक्षात्मक रूप से सोच सकने, रचनात्मक बनने और अपने परिवेश में सहयोग, संवाद और जुड़ाव स्थापित कर सकने में मद्दगार साबित होता है।
5. अभिभावकों और समुदाय के साथ भागीदार बनाकर काम करना जिससे सभी बच्चों को आगे बढने के अवसर मिल सकें।

शाला पूर्व शिक्षा के बच्चे अपने परिवेश में रंगों, आकृतियों, ध्वनियों आकारों और नमूनों के प्रति अत्यन्त जिज्ञासु और उत्साही होते हैं। उनकी अपने आस–पास के परिवेश को जानने, समझने की और विभेदीकरण की क्षमता दिन प्रतिदिन समृद्ध होती जाती हैं। इन्हीं गतिबिधियों को अग्रसर करने एवं बालको के शैक्षिक एवं बैद्धिक विकास के लिए ऑगनबाडी केन्द्रों में शाला पूर्व शिक्षा की व्यवस्था की गई है। ताकि 06 वर्ष से कम आयु के बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। स्कूल पूर्व शिक्षा सामाजिक, भावानात्मक, बैद्धिक, शारीरिक और सौन्दर्य बोध के विकास को बढावा देने के लिए खेल के माध्यम से प्रदान की जाती है, उन्हें प्राथमिक शिक्षा के लिए भी तैयार किया जाता है। यह सेवा ऑगनबाडी केन्द्रों पर ऑगनबाडी कर्मियों के अलावा आंगनबाडी के बाहर अभिभावकों, स्वयंसेवी संस्थाओं या निजी क्षेत्र के स्कूलों (प्राईमरी पूर्व और नर्सरी) आदि की देख रेख में भी दिया जा रहा है।

कुछ मान्यताएं तथा अनुरूप शैक्षिक क्रियाएँ

1. चूँकिं बच्चों के लिए ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव सीखने का साधन बन कर उनकी विचारशीलता तथा समझ को विकसित करते हैं। अतः ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण विविध गतिविधियों से किया जाएगा।
2. बच्चे अनुकरण तथा अनुभव से सीखते हैं। अतः शिक्षक हर अनुभव प्रक्रियाबद्ध व्यवस्थित उदाहरणों तथा प्रक्रियाओं से देगें, जो सीखने के सिद्धांतों से अनुरूप होंगे।
3. बच्चों का ध्यान एक क्रिया पर कम समय के लिए स्थित होता हैं। अतः सीखने के प्रकरण छोटे समय के तथा सूक्ष्म होंगे तथा विविधता लिए होंगे ताकि बच्चों का उत्साह एवं रूचि उनमें बनी रहे।
4. बच्चों के अनुभव का संसार उनके आसपास के परिवेश तथा उनकी वस्तुओं से बनता है अतः उन्हे अनुभव देने के लिए उन्हीं वस्तुओं को उपयोग में लाया जाएगा जो आस–पास के परिवेश में उपलब्ध हो एवं बच्चे उनके साथ आसानी से परिचय बना सकें।
5. बच्चों की सामाजिकता को बाल–मित्रता के वातावरण में उनके आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए, औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार किया जाएगा ताकि वे भाषा तथा गणित के प्रारंभिक अमूर्त संकेतो को पहचान सकें और सीख सकें।
6. बच्चों में खेलों के दौरान प्रतियोगिता को बढ़ावा न देकर सामूहिकता एवं सहभागिता की भावना को बढ़ाने वाली प्रक्रियाएं गतिविधियां एवं अभ्यास होगें जिसमें प्रत्येक बच्चे के विकास में मदद मिले। हमारा प्रयास होगा कि बच्चों में अनावश्यक प्रतियोगिता उससे जनित असफलता एवं हीन भावना को रोका जा सके। वे अपनी आत्म–छवि या आत्मसम्मान को बनाए रख सके।

बच्चे जो गतिविधियां करते हैं वें अवचेतन मन से तथा मात्र अपने आनन्द के लिये करते हैं। यदि हम उन्हीं गतिविधियों को सचेत होकर करवाते हैं, उस प्रक्रिया को तकनीकी एवं मानक शब्दावली का उपयोग करते हुए विश्लेषित करते हैं। समझाते हैं तो वह गतिविधि सीखने का माध्यम बन जाती है और उस गतिविधि में निहित प्रत्येक क्रिया के पीछे के सिद्धांत की भी समझ बच्चे में बनती है। बच्चों मे सीखने के व्यवस्थित क्रम के लिये यह जरूरी है कि शिक्षकों के समक्ष एक स्पष्ट अवधारणा एवं संरचना हो जिस पर अमल कर वे अपने कार्य एवं भूमिकाओं को व्यवस्थित ढंग से नियोजित कर

सके। इस नियोजन में 'क्या करेगें, 'क्यों करेगें', 'कैसे करेगे', की स्पष्टता शामिल है। हमने बच्चों में सीखने की प्रक्रिया की संरचना में तीन घटकों को सम्मिलित किया है, ये हैं –

1. शारीरिक तथा जीवन कौशल विकास।
2. सृजनात्मक विकास (कला, हस्तकार्य, गायन, कठपुतली आदि माध्यमों के उपयोग से)
3. ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास।

सीखने के क्रम को एक तिमाही योजना में ढाला गया है। जिसके प्रत्येक घटक को सीखते हुए अपने जीवन में उतार सकते हैं

संदर्भ ग्रंथ

1. आंगनवाडी प्रवेशिका 2014
2. न्यू एजुकेशन फाउडेशन फार एनोवेशनएण्ड रिसर्च इन एजुकेशन।
3. गुणवत्ता के साथ सर्वव्यापीकरण– आंगनवाडी के लिए पहल एक प्रवेशिका 2007 राजी रोटी अधिकार अभियान सचिवालय दिल्ली
4. आईसी.डी.एस. मिशनः द ब्राड फ्रेमवर्क फॉर इंप्लीमेंटेशन 2012 महिला एवं बाल विकास मंत्रालय नई दिल्ली
5. आईसी.डी.एस. प्रोग्राम एण्ड सर्विसेज 2010 महिला एवं बाल विकास मंत्रालय म.प्र.।
6. ' क्षेत्रीय प्रेस से चयन, वी. पी 68.
7- गुणवत्ता के साथ सर्वव्यापीकरण– आंगनवाडी के लिए पहल एक प्रवेशिका 2007 रोजी रोटी अधिकार अभियान सचिवालय दिल्ली